International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-07-2026, Accepted: 11-08-2026, Published: 26-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 119-120

अध्यात्म कल्पद्रुम एवं अष्टावक्र गीता रू एक परिचयात्मक अध्ययन

साध्वी समृद्धि,[1], डा. मैथिली प्र. राव[2]
[1] शोधार्थी, जैन, मानद विश्वविद्यालय, बेंगळूरु, कर्नाटक, भारत
[2] मार्गदर्शक, जैन, मानद विश्वविद्यालय, बेंगळूरु, कर्नाटक, भारत

सारांश
भारतीय दार्शनिक परंपरा में आत्मा, संसार और मुक्ति से संबंधित चिंतन अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। विभिन्न दार्शनिक धाराओं ने आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया को अलग–अलग दृष्टियों से समझाया है। जैन परंपरा का अध्यात्म कल्पद्रुम तथा अद्वैत वेदांत की परंपरा का अष्टावक्र गीता ऐसे दो महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जो आत्मज्ञान और मोक्ष के मार्ग का विशद प्रतिपादन करते हैं। प्रस्तुत शोधपरक आलेख में इन दोनों ग्रंथों का परिचयात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों ग्रंथों का मूल लक्ष्य आत्मज्ञान की प्राप्ति है, किंतु उनकी दार्शनिक पद्धति और आध्यात्मिक साधना की प्रक्रिया में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी हैं।

मूल शब्दः अध्यात्म कल्पद्रुम, अष्टावक्र गीता, जैन दर्शन, अद्वैत वेदांत, आत्मज्ञान, मोक्ष

भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता और आत्मचिंतन का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उपनिषदों से लेकर जैन और बौद्ध ग्रंथों तक आत्मा, संसार और मुक्ति के प्रश्नों पर गहन चिंतन किया गया है। इन ग्रंथों का उद्देश्य केवल दार्शनिक विचार प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि मनुष्य को आत्मबोध और आंतरिक स्वतंत्रता की दिशा में प्रेरित करना भी है। जैन परंपरा का अध्यात्म कल्पद्रुम तथा अद्वैत वेदांत परंपरा का अष्टावक्र गीता इसी आध्यात्मिक चिंतन की दो महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियाँ हैं। अध्यात्म कल्पद्रुम जैन दर्शन की आध्यात्मिक साधना का ग्रंथ है, जिसमें समता, वैराग्य, ममत्व–त्याग और आत्मानुशासन के माध्यम से मोक्षमार्ग का विवेचन किया गया है। दूसरी ओर अष्टावक्र गीता अद्वैत वेदांत की एक अत्यंत प्रभावशाली कृति है, जिसमें आत्मा की निरपेक्ष स्वतंत्रता और अद्वैत स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है। इसमें आत्मज्ञान को तत्काल मुक्ति का साधन बताया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इन दोनों ग्रंथों की दार्शनिक पृष्ठभूमि, शिक्षाओं और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

अध्यात्म की अवधारणा

भारतीय दर्शन में "अध्यात्म" शब्द का संबंध आत्मा के स्वरूप और उसकी अनुभूति से है। जैन परंपरा में आचार्य यशोविजयजी अध्यात्म की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि आत्मा के स्वरूप को जानना और बाह्य व्यवहार से मुक्त होकर आंतरिक शुद्धि प्राप्त करना ही अध्यात्म है। अर्थात अध्यात्म का लक्ष्य मनुष्य को बाहरी आसक्तियों से मुक्त कर आत्मिक शुद्धता की ओर ले जाना है।

अध्यात्म कल्पद्रुमः स्वरूप और दर्शन

1. ग्रंथ का परिचय

अध्यात्म कल्पद्रुम जैन दर्शन का एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक ग्रंथ है। इसके रचयिता आचार्य मुनिसुन्दर सूरीश्वरजी माने जाते हैं। यह ग्रंथ साधक को क्रमिक रूप से आत्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक है।

इस ग्रंथ में सोलह अधिकारों के माध्यम से आत्मसाधना के विभिन्न आयामों का वर्णन किया गया है, जैसे—

- समता
- ममत्व–त्याग
- कषाय–निग्रह
- वैराग्य
- चित्तनिग्रह
- धर्मशुद्धि

ग्रंथ का उद्देश्य आत्मा को संसारिक बंधनों से मुक्त कर उसकी शुद्ध अवस्था तक पहुँचाना है।

2. समता का सिद्धांत

अध्यात्म कल्पद्रुम में समता को आध्यात्मिक साधना का आधार माना गया है। समता का अर्थ है—सुख–दुख, लाभ–हानि और सम्मान–अपमान जैसी परिस्थितियों में मन को स्थिर रखना।

जैन दर्शन के अनुसार समता की प्राप्ति के लिए चार भावनाएँ आवश्यक हैं—

1. मैत्री
2. करुणा
3. प्रमोद
4. माध्यस्थ

ये भावनाएँ साधक को राग–द्वेष से मुक्त करती हैं।

3. ममत्व–त्याग

ग्रंथ में संसार–बंधन का प्रमुख कारण "ममत्व" बताया गया है। मनुष्य स्त्री, पुत्र, धन और शरीर के प्रति अत्यधिक आसक्ति रखता है। इन आसक्तियों के कारण जीव कर्मबंधन में बंध जाता है। इसलिए साधक को इन आसक्तियों से मुक्त होकर आत्मा के शुद्ध स्वरूप की ओर उन्मुख होना चाहिए।

4. कषाय सिद्धांत

जैन दर्शन में चार प्रमुख कषायों को संसार का मूल कारण माना गया है—

- क्रोध
- मान
- माया
- लोभ

इन कषायों के कारण आत्मा की शुद्धता नष्ट हो जाती है। इसलिए आध्यात्मिक साधना का उद्देश्य इन कषायों का नियंत्रण करना है।

अष्टावक्र गीता: स्वरूप और दर्शन

1. ग्रंथ का परिचय

अष्टावक्र गीता अद्वैत वेदांत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह ग्रंथ ऋषि अष्टावक्र और मिथिला के राजा जनक के संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ में आत्मा की पूर्ण स्वतंत्रता और अद्वैत स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है। अष्टावक्र गीता के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्त होते ही मनुष्य तत्काल मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

2. अद्वैत का सिद्धांत

अष्टावक्र गीता का मूल सिद्धांत अद्वैत है। इसके अनुसार आत्मा और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है।

एक प्रसिद्ध श्लोक में कहा गया है—

"क्व भूतानि क्व देहो वा क्वेन्द्रियाणि क्व वा मनः ।
क्व शून्यं क्व च नैराश्यं मत्स्वरूपे निरंजने ।।"

व्याख्या

इस श्लोक का अर्थ है कि आत्मा के शुद्ध स्वरूप में न शरीर है, न इंद्रियाँ, न मन। आत्मा इन सब से परे है।

3. देहाभिमान का खंडन

अष्टावक्र गीता का एक महत्वपूर्ण संदेश है—देहाभिमान का त्याग। अष्टावक्र कहते हैं कि व्यक्ति का वास्तविक स्वरूप शरीर नहीं, बल्कि चेतना है। इस दृष्टि से यह ग्रंथ चेतना की स्वतंत्रता और आध्यात्मिक आत्मविश्वास का संदेश देता है।

4. विदेह अवस्था

अष्टावक्र गीता में "विदेह अवस्था" का वर्णन मिलता है।
इसके अनुसार मनुष्य शरीर में रहते हुए भी स्वयं को शरीर से अलग अनुभव कर सकता है। घड़े के टूट जाने पर भी उसमें स्थित आकाश नष्ट नहीं होता, उसी प्रकार शरीर के नष्ट होने से आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

यह स्थिति जीवनमुक्ति की अवस्था है।

तुलनात्मक अध्ययन

1. समानताएँ

- **आत्मज्ञान का महत्व**

दोनों ग्रंथ आत्मज्ञान को मुक्ति का आधार मानते हैं।

- **देहाभिमान का निषेध**

दोनों ग्रंथ शरीर से आसक्ति को आध्यात्मिक प्रगति में बाधक मानते हैं।

- **वैराग्य का महत्व**

दोनों ग्रंथ संसारिक आसक्ति से मुक्त होने पर बल देते हैं।

- **समता की भावना**

दोनों ग्रंथों में समता और मानसिक संतुलन का महत्व स्वीकार किया गया है।

2. भिन्नताएँ

- **दार्शनिक आधार**

अध्यात्म कल्पद्रुम जैन दर्शन पर आधारित है, जिसमें आत्मा और पदार्थ के बीच स्पष्ट भेद स्वीकार किया गया है। अष्टावक्र गीता अद्वैत वेदांत पर आधारित है, जिसमें आत्मा और ब्रह्म की एकता का सिद्धांत है।

- **मुक्ति की प्रक्रिया**

जैन दर्शन में मुक्ति क्रमिक साधना से प्राप्त होती है। अष्टावक्र गीता के अनुसार आत्मज्ञान प्राप्त होते ही तत्काल मुक्ति संभव है।

- **नैतिक अनुशासन**

अध्यात्म कल्पद्रुम में नैतिक अनुशासन और तप का विशेष महत्व है। अष्टावक्र गीता में ज्ञान को ही प्रमुख साधन माना गया है।

दार्शनिक महत्व

इन दोनों ग्रंथों का भारतीय दर्शन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अध्यात्म कल्पद्रुम जैन आध्यात्मिक साधना का व्यवस्थित मार्ग प्रस्तुत करता है। अष्टावक्र गीता आत्मा की पूर्ण स्वतंत्रता और अद्वैत अनुभव का प्रतिपादन करती है। दोनों ग्रंथ यह दर्शाते हैं कि भारतीय दर्शन में आध्यात्मिक अनुभव को सर्वोच्च महत्व दिया गया है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अध्यात्म कल्पद्रुम और अष्टावक्र गीता भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के दो अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। दोनों ग्रंथ आत्मज्ञान और मुक्ति के मार्ग का प्रतिपादन करते हैं, किंतु उनकी दार्शनिक पद्धति भिन्न है। अध्यात्म कल्पद्रुम जैन दर्शन के नैतिक अनुशासन और क्रमिक साधना पर बल देता है, जबकि अष्टावक्र गीता अद्वैत अनुभव और आत्मज्ञान की तत्काल अनुभूति पर बल देती है। इस प्रकार इन दोनों ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय दर्शन की विविधता और समृद्धि को स्पष्ट करता है।

संदर्भ सूची

1. मुनिसुन्दर सूरीश्वरजी — अध्यात्म कल्पद्रुम
2. अष्टावक्र गीता
3. दासगुप्ता, सुरेन्द्रनाथ, भारतीय दर्शन का इतिहास
4. राधाकृष्णन, एस., Indian Philosophy
5. स्वामी शंतानंद, Selected Gems from Ashtavakra Gita
6. J L Brockingtons, The Heart of Awareness: Translation of Ashtavakra Gita